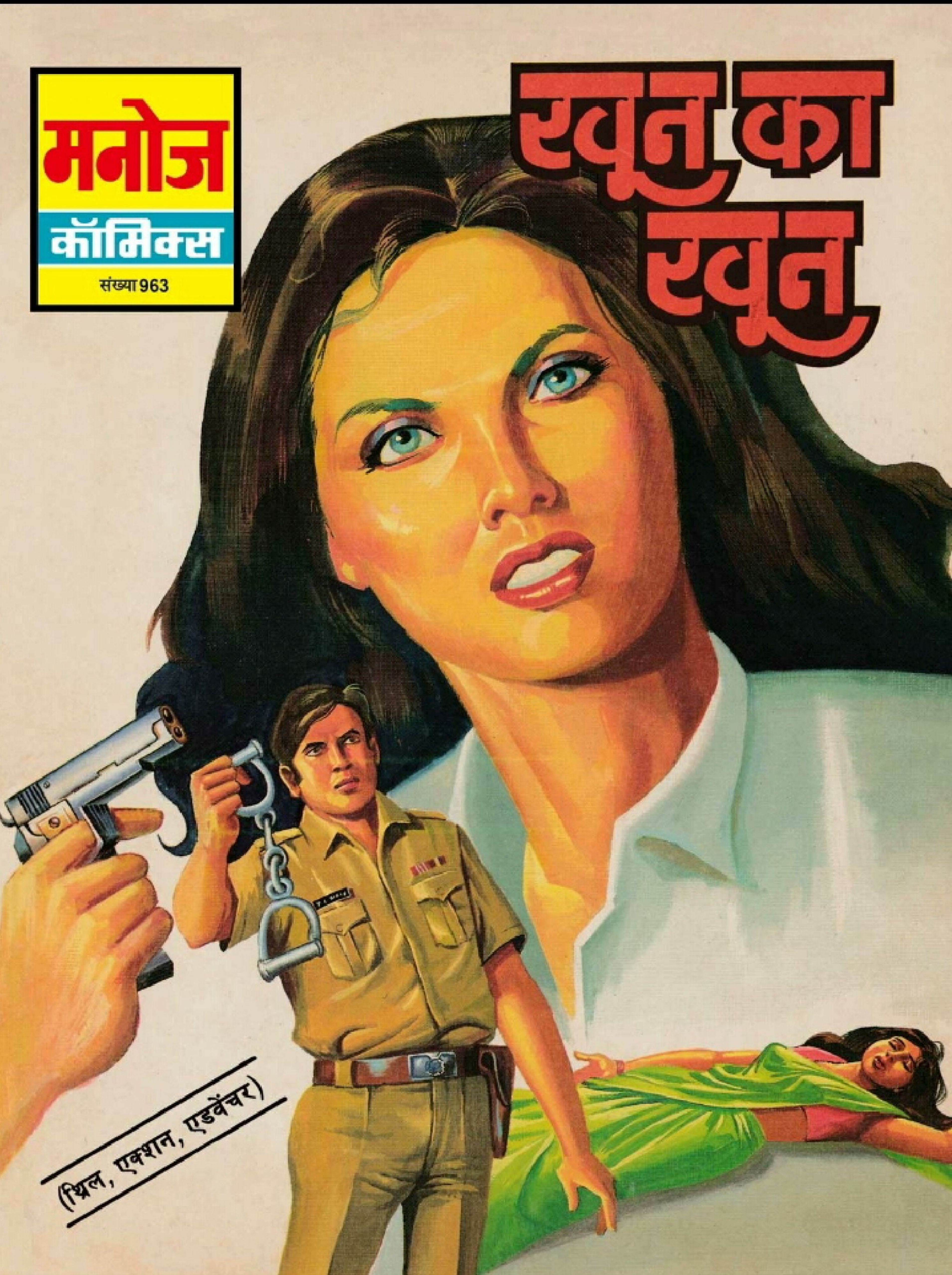

मनोज
कॉमिक्स
संख्या 963
खून का खून
(थ्रिल, एक्शन, एडवेंचर)

# खून का खून

कथानक : हनीफ अजहर.

चित्रांकन : दिलीप कदम, जयप्रकाश जगताप.





अब मुझे निकल लेना चाहिए, रॉकी से भी मिलना है!
कुछ देर बाद वह एक टी.वी. मैकेनिक की दुकान पर खड़ा था।
काम हो गया रॉकी?
रॉकी इलेक्ट्रोनिक्स
हां उस्ताद, यह रहा तुम्हारा टी.वी.!
गुड! ये ले अपना हिस्सा और अपनी जुबान बंद रखना। अगर कहीं मुंह फाड़ा तो मैं तेरा पेट फाड़ कर रख दूंगा।
ही...ही...ही...! मैं पूरा ख्याल रखूंगा उस्ताद!
फिर बब्बन टी.वी. समेत एक ऑटो रिक्शा में सवार हो गया।
कहां चलना है साहब?
बुलवर्ड रोड। कोठी नं. बारह!
जाने कौन है, जिसे हत्या का यह अनोखा तरीका पसंद आया है?


बब्बन की आंखों के आगे एक दिन पहले की वह घटना चल चित्र की भांति घूमने लगी, जब उस रहस्यमय शख्स ने पहली बार फोन करके उसे जमुना नदी के तट पर बुलाया था।
तुमने ही मुझे फोन किया था?
हां बब्बन! मुझे तुमसे एक कत्ल करवाना है।
किसका?
एक निरीह औरत का। वह अक्सर घर में अकेली होती है!
काम हो जाएगा। कीमत पचास हजार! दस हजार एडवांस।
मंजूर, दस हजार तुम तक पहुंच जायेंगे। लेकिन कत्ल मेरी योजना के अनुसार होगा!
कत्ल तुम्हारे प्लान के अनुसार करना होगा?
हां, घबराओ मत। मेरा प्लान फूल-प्रूफ है। तुम्हारे फंसने का कोई चांस नहीं है!
फिर वह व्यक्ति उसे अपना प्लान समझाने लगा।
और आज बब्बन उसी के प्लान के अनुसार हत्या करने जा रहा था।
DFR 6699
उधर बुलवर्ड रोड कोठी नम्बर बारह के भीतर -
उफ! गर्मियों के मौसम में शॉपिंग करने जाना भी एक मुसीबत है!


तभी—
डिंग...डांग...
ओफ्फो! कौन आ मरा इस वक्त?
दरवाजा खोलने पर—
नमस्कार मैडम! क्या माथुर साहब की कोठी यही है?
हां, लेकिन साहब तो दफ्तर गये हुए हैं!
मुझे मालूम है मैडम, साहब ने ही दफ्तर से हमारे शोरूम में फोन करके इस कलर टी.वी. का आर्डर दिया था!
कलर टी.वी.! लेकिन राजेन्द्र ने तो मुझे इस विषय में कुछ नहीं बताया था।
ओह! समझी! आज शाम मेरा बर्थ डे है, इसलिए राजेन्द्र मुझे सरप्राइज देना चाहता होगा!
ठीक है, टी.वी. अंदर रख दो!
बब्बन टी.वी. भीतर रखकर वहां से चला गया। उसके जाने के बाद, संगीता ने पुराना टी.वी. खाली डिब्बे में पैक करके स्टोर रूम में रख दिया और उस दिन का न्यूज पेपर उठा लिया।
जरा देखूं तो आज टी.वी. पर क्या-क्या प्रोग्राम आने वाले हैं!


दूरदर्शन वाले कालम पर नजर डालते ही—
आहा! आज दोपहर ढाई बजे हिंदी फिल्म आने वाली है!
अरे! ढाई तो बज भी चुके हैं!
उसने जल्दी से उठकर टी.वी. का प्लग लगाया।
कलर टी.वी. पर फिल्म देखने का अपना ही मजा है।
लेकिन जैसे ही उसने टी.वी. ऑन करने के लिए स्विच दबाया। उसे तेज करन्ट लगा—
आ...ई...ई...ई...
ई...ई...ई...
उसकी तड़फड़ाहट के कारण टी.वी. उसके ऊपर आ गिरा।
छनाक
धड़ाक
ई...ई...ई...


कुछ ही पलों में उसके प्राण पखेरू उड़ गये।
इस घटना के कुछ देर बाद—
अरे! आज दरवाजा कैसे खुला हुआ है? बीवीजी तो हमेशा दरवाजा बंद करके रखती हैं।
यह घर की सफाई करने वाली नौकरानी थी।
तभी उसकी दृष्टि अंदर के दृश्य पर पड़ी।
नहीं SSS
खून... खून...!
इस घटना के कुछ देर बाद—
ट्रिन... ट्रिन...
हैलो! राजेन्द्र माथुर स्पीकिंग!
मिस्टर माथुर, मैं इंस्पेक्टर शेखर बोल रहा हूं। आपकी पत्नी की मृत्यु हो गई है!
व्हाट? मैं अभी आ रहा हूं!
कुछ ही देर बाद—
लेकिन ये सब हुआ कैसे, इंस्पेक्टर साहब?
हमें लगता है टी.वी. का स्विच ऑन करते समय टी.वी. में करंट आने की वजह से आपकी पत्नी की जान गई है!



यह टी.वी.? इं. साहब, यह टी.वी. तो हमारा नहीं है!
क्या कहा? यह टी.वी. आपका नहीं है!
मैं ठीक कह रहा हूं इंस्पेक्टर साहब!
ओह! तो फिर यह टी.वी. यहां कैसे आ गया?
सर, कहीं ऐसा तो नहीं है कि मिसेज माथुर की हत्या की गई हो और इस टी.वी. को हथियार के रूप में प्रयोग किया गया हो।
तुम्हारी बात में दम है, गुप्ता, यह कत्ल का केस भी हो सकता है!
लेकिन इंस्पेक्टर साहब, हमारी तो किसी से भी दुश्मनी नहीं है, फिर संगीता की हत्या किसने की होगी!
कुछ दुश्मन दोस्त की खाल में छुपे होते हैं। लेकिन आप चिंता मत कीजिए, हत्यारा हमारे हाथों से बचेगा नहीं!
उधर रात को पास्कल के बार में-
शाबाश बब्बन! शाबाश! तुमने अपने काम को बहुत अच्छे ढंग से अंजाम दिया है, हम बहुत खुश हैं।
मतलब की बात करो सेठ, मेरे बाकी रोकड़े का क्या हुआ?


तुम आज ही पुरानी वाली जगह पर आकर अपना रुपया ले जा सकते हो!
ठीक है सेठ!
BAR
कुछ देर बाद वह टैक्सी में सवार कहीं जा रहा था।
एक कत्ल के पचास हजार रुपये! अगर मेरा धंधा इसी तरह चलता रहा तो मैं कुछ ही दिनों में लखपति बन जाऊंगा!
जल्दी ही वह जमुना नदी के पुल के किनारे खड़ा था, जहां वह पहली बार उस रहस्यमय शख्स से मिला था।
यहां तो कोई नहीं, शायद कहीं फंस गया होगा। मैं यहीं बैठकर उसका इंतजार करता हूं।
लेकिन वह नहीं जानता था कि एक साया उस पर निगाह रखे हुए था।
बेचारा बब्बन! पचास हजार का मालिक बनने की इच्छा को दिल में दबाये ही इस दुनिया से कूच कर जायेगा!
अगले ही पल—
धांय
ई...ई...ई...


अपराध का कोई भी सबूत छोड़ना सबसे बड़ी मूर्खता होती है!
अगली सुबह पुलिस स्टेशन में-
ओह! ठीक है, मैं अभी पहुंचता हूं!
रामसिंह, जमुना तट पर एक लावारिस लाश मिली है। फौरन चलने की तैयारी करो।
ठीक है साहब!
कुछ देर बाद जमुना नदी के तट पर-
सर! गोली लाश की पीठ पर लगी है।
लाश की शिनाख्त हुई?
क्लिक!
नहीं सर!
तो कल के अखबारों में इसकी फोटो छपवाओ। शायद इसकी शिनाख्त में कोई मदद मिल सके!
अगले दिन शाम को-
नमस्ते साहब! मैं आटोरिक्शा चलाता हूं! आपने अखबार में जिस आदमी का फोटो छपवाया है, उसे कल मैंने ही बुलवर्ड रोड पर छोड़ा था। उसके पास एक टी.वी. भी था साहब!
ओह! यह तो एक बहुत बड़ी सफलता हाथ लग गयी। इसका मतलब, मकतूल संगीता माथुर का कातिल था!


क्या तुम मुझे वहां ले जा सकते हो, जहां से तुमने उस आदमी को अपने ऑटो में बिठाया था?
क्यों नहीं साहब! आप अभी मेरे साथ चलिये!
कुछ क्षण बाद–
जल्द ही–
साहब, यही है वो जगह!
ठीक है, अब तुम जा सकते हो। यह लो अपना किराया।
इधर-उधर नजर दौड़ाने पर–
ओह! हत्या के लिए रॉकी इलेक्ट्रॉनिक्स से खरीदे गये टी.वी. का इस्तेमाल किया गया था। क्यों न यहीं से शुरुआत की जाये!
इलेक्ट्रॉनिक्स
यह सोच वह दुकान पर पहुंचा।
यस सर! कहिए मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं?
ओह! रॉकी! यह जेल से कब छूटा?
रॉकी एक सजा याफ्ता मुजरिम था। इंस्पेक्टर शेखर उसे फौरन पहचान गया था।
लेकिन उसने यह बात उस पर जाहिर नहीं होने दी और बोला–
मुझे एक टेलीविजन बम बनवाना है।
टी.वी. बम?


क...क्या बात कर रहे हैं साहब! कहीं टी.वी.बम भी होता है?
अचानक शेखर उस पर झपट पड़ा!
तड़ाक
आह!
साले! जब तेरे जैसे दस नम्बरी आदमी टी.वी.रिपेअर की दुकान चलाते हैं तो टी.वी.बमही क्या हवाई जहाज बम भी बन सकता है।
य...य...ये आप क्या कह रहे हैं साहब?
मैं तुझे खूब अच्छी तरह पहचानता हूं राकी, तू एक सजा-याफ्ता मुजरिम है। अगर तूने सबकुछ साफ-साफ नहीं बताया तो मैं तुझे जेल में सड़ा दूंगा।
ल...ल...लेकिन मैंने गुनाह क्या किया है साहब?
क...कौनसा टी.वी. साहब? आप क्या कह रहे हैं, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा?
साले, लगता है तू ऐसे नहीं मानेगा!
धाड़
आऽऽऽऽ
हरामजादे, यह भी मैं बताऊंगा तुझे! बता, वह टी.वी. तूने किसे दिया था?


अगले पल–
हा...य!
धाड़
तड़ाक
उफ!
राकी शायद ज्यादा देर मार खाने के मूड में नहीं था।
म... म... मुझे छोड़ दो। म...मैं आपको बता दूंगा साहब!
आखिर मेरा अन्दाजा सही साबित हुआ!
बोल, किसके कहने पर तूने वह कातिल टी.वी. तैयार किया था?
बब्बन के कहने पर। इस काम के लिए उसने मुझे पांच हजार रुपये दिये थे!
बब्बन! कहां रहता है वह?
यह तो मैं नहीं जानता साहब! लेकिन वह अक्सर पास्कल के बार में मिलता है!
पास्कल का बार?
हां!
अगर तुमने झूठ बोला है तो एक बार फिर सोच लो राकी। मैं तुम्हारे लिए बहुत बुरा आदमी साबित हूंगा!
मैं सच कह रहा हूं साहब, कसम से!

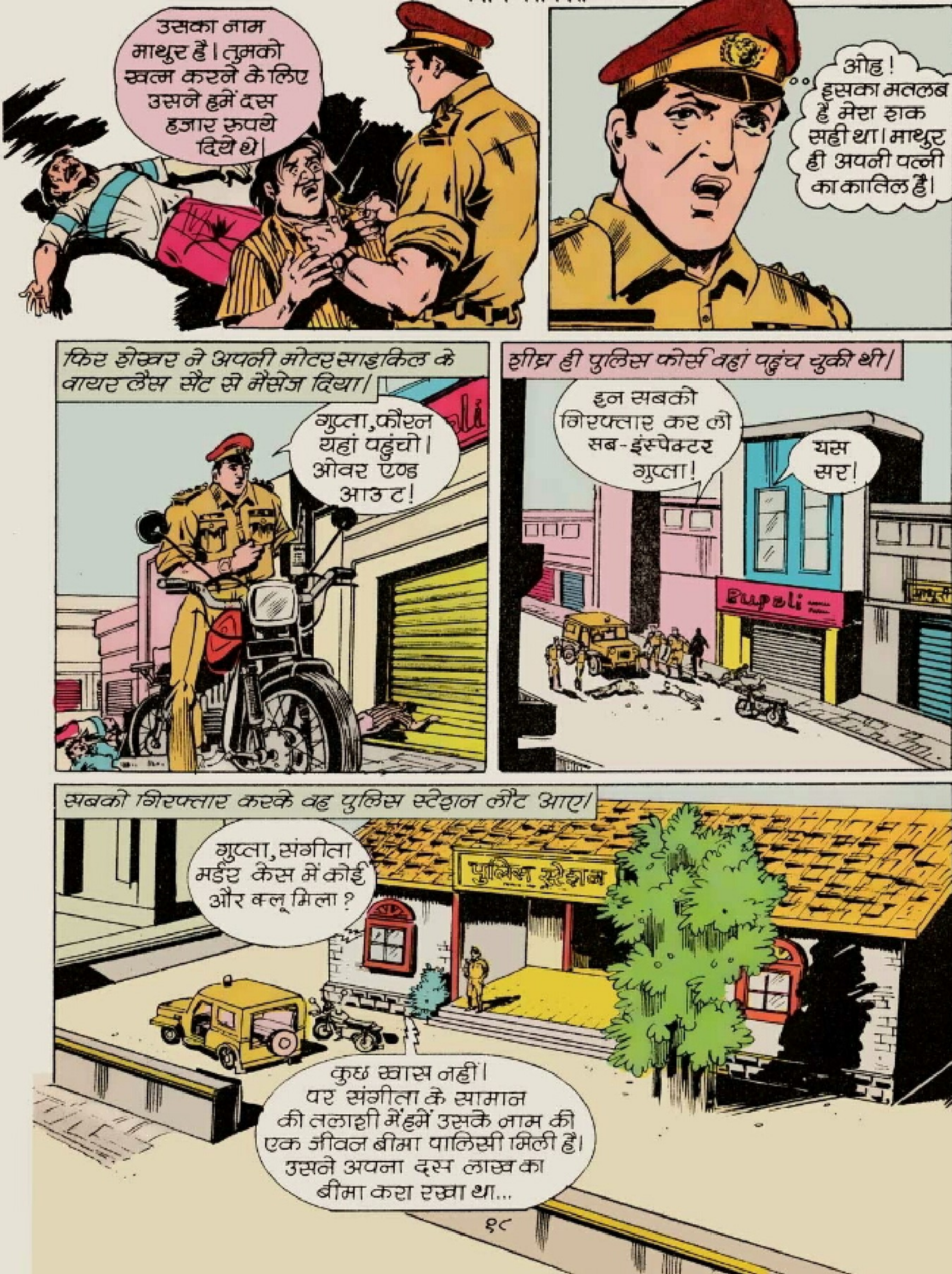

शीघ्र ही पास्कल के बार में-
बब्बन कहां है पास्कल?
बब्बन! कौन बब्बन?
तुम्हारे चेहरे के भाव बता रहे हैं पास्कल कि तुम बब्बन को अच्छी तरह जानते हो। अतः बुद्धिमानी इसी में है कि बब्बन के बारे में जो भी जानते हो सच-सच कहो, वरना इस बार को अभी से बंद समझना, समझे!
ज... जी!
तो फिर फटाफट चालू हो जाओ!
बब्बन एक पेशेवर हत्यारा था साहब! पैसे लेकर हत्या करना उसका पेशा था...
...कुछ दिन पहले एक गुमनाम आदमी ने उसे टेलीफोन पर हत्या करने का ठेका दिया था!
वह फोन कहां से आया था?
BAR
मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता साहब!
हुम्म!
पास्कल, अब कोई ऐसी खास बात याद करो जो कभी बब्बन ने तुम्हें उस फोन के सम्बंध में बताई हो?


नहीं साहब! बब्बन ने मुझे इस बारे में कभी कुछ नहीं बताया।
ओह!
ठीक है, पास्कल, मैं चलता हूं। लेकिन अगर कोई बात याद आये तो मुझे सूचित करना न भूलना!
ठीक है साहब!
पास्कल के बार से बाहर आकर शेखर अपने घर की ओर चल पड़ा।
यह तो साबित हो चुका है कि माथुर की पत्नी की हत्या बब्बन ने किसी के कहने पर की थी। मगर वह व्यक्ति कौन हो सकता है?
तभी—
ओह! कहीं यह काम माथुर का ही तो नहीं!
बाई गॉड! ऐसा भी हो सकता है। मुझे यह विचार पहले क्यों नहीं आया! कल ही सुबह माथुर को चैक करूंगा।
जब वह अपने घर पहुंचा तो उसने टी.वी. ऑन कर दिया। टी.वी. पर 'वर्ल्ड दिस वीक' प्रोग्राम आ रहा था।
जारकलैंड के राष्ट्रपति माईकल रूज को अपदस्थ कर गिरफ्तार कर लिया गया...
ओह!


...उनकी गिरफ्तारी की खबर सुनते ही भारत में रहने वाले जारकलैंड के नागरिकों का एक विशाल जन-समूह जारकलैंड के दूतावास पर प्रदर्शन के लिए पहुंचा...
...और राष्ट्रपति माईकल रूज के पक्ष में नारे लगाए!
वी वान्ट
माईकल रूज
अगले दिन सुबह–
आज मुझे माथुर को चैक करना है!


अभी वह कुछ ही दूर गया था कि अचानक-
धड़ाक
आह!
धाड़
उफ!
पुलिस डिपार्टमेन्ट भी कैसे-कैसे कमजोर लोगों को इंस्पेक्टर की वर्दी पहना देता है!
हा...हा...हा...!
ख़त्म कर दो साले को!
???
अगले पल इंस्पेक्टर शेखर अप्रत्याशित ढंग से उछला और-
मुझे ख़त्म करना तुम जैसे चूहों का काम नहीं है कुत्तो!
धाड़
ओह!


यह ले!
धाड़
आ... ह...!
खटाक
ई...ई...ई...
आह!
धाड़
उफ!
हाय!
सांय
उफ! बच गया!
शीघ्र ही इंस्पेक्टर शेखर ने सबको धराशायी कर दिया।
बोल कमीने, किसने भेजा है तुम्हें?
ब...ब... बताता हूं!
माधुरी स्वीट्स
V.K. MART


उसका नाम माथुर है। तुमको खत्म करने के लिए उसने हमें दस हजार रुपये दिये थे।
ओह! इसका मतलब है मेरा शक सही था। माथुर ही अपनी पत्नी का कातिल है।
फिर शेखर ने अपनी मोटर साइकिल के वायरलैस सैट से मैसेज दिया।
गुप्ता, फौरन यहां पहुंचो। ओवर एण्ड आउट!
शीघ्र ही पुलिस फोर्स वहां पहुंच चुकी थी।
इन सबको गिरफ्तार कर लो सब-इंस्पेक्टर गुप्ता!
यस सर!
सबको गिरफ्तार करके वह पुलिस स्टेशन लौट आए।
पुलिस स्टेशन
गुप्ता, संगीता मर्डर केस में कोई और क्लू मिला?
कुछ खास नहीं। पर संगीता के सामान की तलाशी में हमें उसके नाम की एक जीवन बीमा पालिसी मिली है। उसने अपना दस लाख का बीमा करा रखा था...


और यह सुनकर आपको हैरानी होगी सर कि मरने वाली ने अपनी बीमा पालिसी का हकदार अपने पति को नहीं, बल्कि अपनी छोटी बहन गीता को बना रखा है।
ओह। तो क्या मरने वाली की कोई बहन भी है!
यस सर! वह आजकल इंग्लैण्ड में है। हमने उसे मैसेज दिया है। आज या कल में वह आती ही होगी।
हुम्म!
वैसे सर, आपका शक किस पर जाता है?
शक नहीं, मैं दावे से कह सकता हूं गुप्ता कि ये कत्ल खुद माथुर ने कराया है...
...उसने आज उन गुण्डों द्वारा मुझे भी मरवाने की कोशिश की थी, जिन्हें तुमने मेरा वायरलैस संदेश पाकर गिरफ्तार किया था।
लेकिन सर, माथुर ने अपनी पत्नी का कत्ल क्यों किया?
यह तो उससे पूछने पर ही पता चलेगा।


यानी आप उसे गिरफ्तार करने जा रहे हैं ?
बिल्कुल!
और कुछ देर बाद राजेंद्र माथुर के घर पर—
यू आर अण्डर अरेस्ट मिस्टर माथुर!
व्हाट?
मुझे गिरफ्तार किया जा रहा है, मगर क्यों? क्या किया है मैंने?
अपनी पत्नी का कत्ल करवाने व मुझे मरवाने की कोशिश के जुर्म में।
य... ये आप क्या कह रहे हैं इंस्पेक्टर? भला मैं अपनी पत्नी...!
शटअप! अब जो कहना है अदालत में जाकर कहना!
हे भगवान! यह सब क्या हो रहा है ?


तभी —
जीजा जी!
गीता तुम ?
ये सब क्या है जीजा जी,आप गिरफ्तार...!
यह संगीता की बहन है! मुझे लगता है, मैंने इसे पहले भी कहीं देखा है।
आपको मैं बताता हूं मैडम, इन्होंने आपकी बहन संगीता का कत्ल किया है!
क्या ?
अचानक गीता बिफर पड़ी —
कमीने! तूने मेरी बहन को मार डाला! मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगी!
ओह!
नहीं गीता, यह सब झूठ है!


अपने आपको संभालिए मिस गीता। आपकी बहन के हत्यारे को कानून सजा देगा।
ले जाओ इसे!
मैं निर्दोष हूं गीता, मैंने संगीता का खून नहीं किया है!
मिस गीता, आप अचानक यहां कैसे?
मैं सीधी एयरपोर्ट से यहां चली आ रही हूं इंस्पेक्टर साहब!
कितना प्यार करती थी दीदी मुझसे। और इस दरिंदे ने उन्हें... बु...हू...हू...!
धीरज रखिए मिस गीता, होनी को कोई नहीं टाल सकता!
अच्छा मिस गीता, अब मैं चलता हूं। आपको किसी मदद की जरूरत हो तो बेहिचक पुलिस स्टेशन चली आइयेगा।
थैंक्यू इंस्पेक्टर!


वापसी में वह गीता के बारे में सोच रहा था।
मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि मैंने इस लड़की को पहले भी देखा है?
हो सकता है, यह मेरे मन का भ्रम हो।
वह सीधा थाने पहुंचा और जरूरी कागजी कार्यवाही निपटाने के बाद जीप वहीं छोड़कर मोटरसाइकिल पर घर की ओर रवाना हो गया। जब वह घर पहुंचा तो समाचार आने का टाइम हो चुका था।
टी.वी. आन कर दूं, समाचार आने वाले होंगे।
खट
कुछ दिन गिरफ्तार रहने के बाद जारकलैंड के राष्ट्रपति श्री माईकल रूज के दुबारा राष्ट्रपति बनने पर देश-विदेश के वरिष्ठ व्यक्तियों ने...
तभी कुछ याद कर इंस्पेक्टर शेखर उछल पड़ा।
ओ! नो!
...उन्हें बधाई संदेश भेजे।
उसने लपककर टी.वी. ऑफ किया...
...फिर कुछ क्षण बाद अपनी मोटरसाइकिल पर सवार तेजी से एक तरफ उड़ा चला जा रहा था वह—
अब मुझे याद आ गया कि मैंने गीता को कहां देखा था!


कुछ ही देर बाद दूरदर्शन केन्द्र पर—
आई एम इंस्पेक्टर शेखर। मैं एक केस के सिलसिले में आपकी मदद चाहता हूं!
कहिए,हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं?
महानिदेशक दूरदर्शन
क्या आप मुझे इस महीने की बीस तारीख के वर्ल्ड दिस वीक की वीडियो कैसेट एक बार दिखाने इंतज़ाम कर सकते हैं?
व्हाई नाट! लेकिन क्या मैं जान सकता हूं, माजरा क्या है?
यह बहुत जरूरी है जनाब, समझ लीजिए कि एक बेगुनाह आदमी की जिंदगी और मौत का सवाल है!
ओ.के. आप कुछ देर इंतजार कीजिए मैं प्रबन्ध करता हूं।
और कुछ देर बाद राजेन्द्र माथुर के घर में।
हैलो, मैं गीता बोल रही हूं।
मेरी बात ध्यान से सुनो मिस गीता, मैं तुम्हारे सारे रहस्य जानता हूं। अगर तुम मेरा मुंह बंद रखना चाहती हो तो एक घंटे बाद दस हजार रुपये लेकर मुझे जमुना के पुल के पास मिलो!


कौन हो तुम...?
यह क्या बकवास कर रहे हो?
ज्यादा चालाक बनने की कोशिश मत करो गीता। जो मैं कहता हूं वही करो, वरना...!
ओ शटअप!
और उसने गुस्से से फोन पटक दिया।
दूसरी ओर—
वह आयेगी! जरूर आयेगी।
और ठीक एक घंटे बाद—
शायद वही है मेरा शिकार जिसने मुझे फोन पर धमकी दी थी।
अगले पल—
मैं आ गई हूं मिस्टर। लेकिन तुम्हें रुपया नहीं मौत मिलेगी। अपना राज जानने वाले को मैं कदापि जिंदा नहीं छोड़ती।
कहने के साथ ही—
धांय


तभी—
खट खट
अगले ही पल वहां दिन का सा उजाला फैल गया।
है! पुलिस का जाल।
सॉरी मिस गीता! अब तुम और कत्ल नहीं कर सकती, क्योंकि पुतले मरा नहीं करते।
उफ!
मुझे पता था, तुम जरूर आओगी, इसलिए हमने तुम्हारे स्वागत का इंतजाम पहले से ही कर रखा था...
???
...मैं तुम्हें संगीता माथुर और बब्बन के कत्ल के इल्जाम में गिरफ्तार करता हूं मिस गीता!
ओह!


आप मेरा जुर्म साबित नहीं कर पायेंगे इंस्पेक्टर, क्योंकि मैं आज सुबह ही...
ना...ना, अब ये मत कहना कि तुम आज ही इंग्लैंड से भारत आई हो, क्योंकि मैं ये साबित कर सकता हूं कि तुम आज नहीं, बल्कि आज से चार दिन पहले ही भारत आ चुकी थी।
ओह!
अब तो तुम स्वीकार करती हो कि संगीता का कत्ल तुमने ही कराया था और बब्बन को खुद अपने हाथों से मारा था!
हां!
क्या मैं जान सकता हूं कि तुमने ये कत्ल क्यों किये?
दरअसल, विदेश में रहकर मैं पैसा पानी की तरह बहाने लगी थी। और रोज-रोज की रुपयों-पैसों की तंगी से मैं परेशान हो चुकी थी।
और जब एक दिन मेरी बहन ने मुझे टेलीफोन पर अपनी जीवन बीमा पालिसी के बारे में बताया तो मेरे दिमाग में लालच का कीड़ा कुलबुलाने लगा...
२७


अगर संगीता किसी तरह मर जाये तो मै उसकी नॉमिनी के रूप में एक झटके में ही दस लाख की मालकिन बन सकती हूं।
यह सोचकर मैंने एक योजना बनाई और उसी के तहत चुपके से भारत आ गई।
तुम्हारी योजना एकदम सफल थी मैडम, लेकिन तुम्हारी किस्मत में शायद कुछ और ही लिखा था। तभी तो तुम उस दिन जारकलैंड एम्बेसी पर राष्ट्रपति माईकल रूज की गिरफ्तारी के रोष में हुए प्रदर्शन के ट्रैफिक जाम मे फंस गई थी।
तुम्हें कैसे पता?
बता दूंगा, पहले तुम तो अपनी बात खत्म करो।
SHERWAR.
हां, उस दिन सचमुच मेरी किस्मत खराब थी। जब मैं एयरपोर्ट से अशोका होटल की तरफ जा रही थी तो...
आगे रोड जाम है मैडम! इस रोड पर जारकलैंड एम्बेसी है। आज वहां के राष्ट्रपति को गिरफ्तार कर लिया गया है, इसलिए लोग एम्बेसी के सामने अपना रोष प्रदर्शित कर रहे है।
क्या हुआ ड्राइवर?


... मै टैक्सी से उतर गई ...
ओह! जाने अब कितनी देर यहां ट्रैफिक जाम रहेगा।
वी वान्ट
माईकंल रूज
सारी कहानी सुनाने के बाद जब गीता चुप हो गई।
और वही ट्रैफिक जाम तुम्हें हत्यारी साबित करने का सबसे बड़ा सबूत बन गया। जब मैंने तुम्हें पहली बार देखा था, तभी मुझे लग रहा था कि मैंने इससे पहले भी तुम्हें कहीं देखा था,लेकिन मुझे कुछ ध्यान नहीं आ रहा था...
...पर आज शाम जब टी.वी पर समाचार सुनते समय जारकलैंड के राष्ट्रपति के गिरफ्तार होने के सम्बन्ध में पुनः समाचार दिया गया तो अचानक मुझे याद आ गया कि मैंनें तुम्हें कहां देखा था...
... तब मैं घर से सीधा दूरदर्शन केन्द्र पहुंचा और वहां बीस तारीख की वर्ल्ड दिस वीक प्रोग्राम की वीडियो कैसट निकलवा-कर देखी...
हां, ये गीता ही तो है। लेकिन ये तो बीस तारीख की घटना है, जब कि वो कहती है कि वह आज यानी चार दिन बाद इंग्लैंड से भारत आई है।
...मेरा मस्तिष्क तेजी से सूत्रों को जोड़ने में लग गया...
एक लड़की, जिसका नाम मरने वाली ने दस लाख रुपये की बीमा पॉलिसी पर नॉमिनी के रूप में दिया था। वो चार दिन पहले भारत आनें के बाद भी यह कह रही है कि उसने आज ही भारत में कदम रखा है...


...कहीं इस सबका मतलब ये तो नहीं की वही अपनी बहन की हत्यारी है?
...फिर मैंने तुम्हें फोन किया। ...
अगर तुम मेरा मुंह बन्द रखना चाहती हो तो एक घंटे बाद दस हजार रुपये लेकर मुझे नाव के पुल के पास मिलो।
काश! मैं तुम्हारी बातों में फंसकर यहां ना आती।
अब अफसोस करना बेकार है मैडम!
काश! तुमने दौलत का महत्व समझा होता तो शायद तुम्हें अपनी बहन का कत्ल करने की जरूरत नहीं पड़ती।
बू...हू...हू...
फिर पुलिस पार्टी गीता को गिरफ्तार कर वापस चल दी।
कितना दरिन्दा हो गया है इंसान! दौलत के लिए अपने खून का ही खून कर देता है।
फाटा
4 km.
समाप्त



जब-जब धरती पर बढ़ता है अत्याचार
तब-तब लेता है जन्म कोई अवतार
और बन जाता है....
युगान्धर
युगान्धर के प्रथम कॉमिक्स विशेषांक की प्रकाशन तिथि की घोषणा की प्रतीक्षा करें